जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जगत के कायिक जीवन में उतनी विकृति नहीं, जितनी की जन-जन के मनों में है।
- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-17

वर्ष : 25, अंक : 10 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संस्थापित एवं संचालित श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में-

पच्चीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में 4 अगस्त से 13 अगस्त 2002 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित 25वाँ बृहद आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज धर्मपत्नी सुनीता बजाज परिवार, कोटा द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री माणेकचन्दजी पाटोदी, लोहारदा ने की। इसके पूर्व श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार, किशनगढ़ ने झण्डारोहण किया। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री भबूतमलजी भण्डारी परिवार बैंगलोर था। इस प्रसंग पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने शिविर की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

विशिष्ट उपलब्धियाँ
- **प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक प्रतिदिन 17 घण्टे तक विविध कार्यक्रमों के माध्यम से अविरल ज्ञान गंगा प्रवाहित।**
- **शिविर में देश के कोने-कोने से पधारे 27 विद्वानों का लाभ मिला।**
- **लगभग 1500 मुमुक्षुओं ने पूरे समय रहकर शिविर का लाभ लिया।**
- **75 हजार 790 रुपये का सत्साहित्य एवं 18 हजार 500 रुपये के कैसिट्स घर-घर पहुँचे।**
- **वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बने।**

शिविर में प्रतिदिन प्रात: 5 से 5.30 तक एवं 7.45 से 8.15 तक पूज्य गुरुदेवश्री के ऑडियो सी.डी. प्रवचन हुये।

इसके अलावा प्रतिदिन डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: एवं सायं समयसार परिशिष्ट के आधार से 47 शक्तियों पर अत्यंत मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचन हुये।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व रात्रिकालीन प्रथम प्रवचनों में सर्वश्री डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल'ललितपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित गुलाबचन्दजी बीना के विभिन्न विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

शिक्षण कक्षाओं में प्रतिदिन पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र, पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका तथा डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई द्वारा पंच लब्धि, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा आप्त मीमांसा (देवागम स्तोत्र), पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा बाल कक्षायें चलाई गईं।

प्रतिदिन प्रात: 5.30 से 6.15 बजे तक पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा संवर अधिकार पर प्रौढ़ कक्षा चलाई गई।

दोपहर की व्याख्यानमाला में डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के चार दिन प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. श्रेयांसकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित योगेशजी शास्त्री बरां के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त दोपहर में ही श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र विद्वानों के प्रवचन भी हुये। इस प्रसंग पर महिला मुमुक्षु मण्डल श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर की ओर से चौंसठ ऋद्धि विधान कराया गया।

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा 1985 से जन-जन के कण्ठ में जिनवाणी को बसाने के उद्देश्य से चलाई जा रही कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत इस वर्ष भी श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने तथा देश के विभिन्न भागों से पधारे अनेक मुमुक्षुओं ने आचार्यों के मूल ग्रन्थों को कण्ठस्थ किया। इन सभी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनांक 10 अगस्त को सायंकाल पुरस्कार वितरण समारोह रखा गया।

महाविद्यालय के ही प्रतिभावान विद्यार्थी प्रवीणकुमार जैन, रायपुर ने आचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार, नियमसार, पंचास्तिकाय आदि 17 ग्रन्थों को न केवल आद्योपान्त कण्ठस्थ किया है; अपितु उन्हें सभा में इसप्रकार प्रस्तुत किया कि मंचासीन विशिष्ट अतिथियों द्वारा ग्रन्थ का नाम

(शेष पृष्ठ - 3 पर .....)

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

12

– रतनचन्द भारिल्ल

स्वयंवर मण्डप में बनारस के राजा अकम्पन की पुत्री सुलोचना ने हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ के पुत्र जयकुमार को वरा। अर्ककीर्ति और जयकुमार का युद्ध हुआ और जयकुमार ने विजय प्राप्त कर अर्ककीर्ति को बन्धन में डाल दिया; पर अकम्पन के कहने पर जयकुमार ने अर्ककीर्ति को ससम्मान छोड़ भी दिया। चक्रवर्ती भरत ने सुलोचना के पति जयकुमार का सम्मान किया।

एक बार जयकुमार अपनी पत्नियों के साथ महल की छत पर बैठे थे। उसीसमय आकाश में जाते हुए सपत्नीक विधाधर युगल को देखकर जयकुमार को जातिस्मरण हो गया और वह मूर्छित हो गए। अन्तःपुर की स्त्रियों द्वारा मूर्च्छा के उपचार से सचेत होते हुए जयकुमार के मुख से निकला – हाय! प्रभावती! तू कहाँ चली गई? उधर इस घटना से जयकुमार को जातिस्मरण ज्ञान हुआ, उसीसमय महल के छज्जे पर क्रीड़ा करते हुए कबूतर–कबूतरी का युगल देखने से सुलोचना को भी जाति स्मरण–ज्ञान प्रगट हो गया और वह भी मूर्छित हो गई। मूर्च्छा का उपचार पाकर सुलोचना हिरण्य वर्मा का नाम लेती हुई उठी। प्रिया के मुख से हिरण्य वर्मा का नाम सुनकर जयकुमार ने उससे कहा – पहले भव में मैं ही हिरण्य वर्मा था। उत्तर में सुलोचना ने कहा – ''वह प्रभावती मैं ही हूँ, जिसे आप याद कर रहे हैं।''

इसप्रकार पति–पत्नी दोनों ने अनेक चिन्हों से यह तो स्पष्ट ही जान लिया कि – पहले भव में वे विधाधर–विधाधरी थे, साथ ही उन्हें विधाधर से भी पूर्व चार भवों का ज्ञान हो गया। उन भवों में वे पहले सुकान्त एवं रतिवेगा थे, बाद में कबूतर–कबूतरी हुए। बाद में ये प्रभावती एवं हिरण्य वर्मा हुए। तत्पश्चात् वे प्रथम स्वर्ग में देवी–देव (युगल) हुए। वे देव दम्पत्ति ही इस वर्तमान भव में जयकुमार–सुलोचना हुए हैं।

पिछले चार भवों में क्रमशः इनके अकालमरण में निमित्त बनकर उद्दिष्टिकारि ने इन्हें जलाकर भस्म किया, फिर विलाप की पर्याय में कबूतर–कबूतरी को मारकर, विद्युतवेग चोर ने हिरण्य वर्मा को पुनः जलाकर अनेक प्रकार से पीड़ा पहुँचाई। अन्त में उट्टिंटिकारि का जीव नरक से निकलकर भीम नामक साधु हो गया और काललब्धि तथा भली होनहार से उसका तो मोक्ष हो गया तथा देवदम्पत्ति स्वर्ग से आकर हम जयकुमार और सुलोचना के रूप में यहाँ उपस्थित हैं।

जयकुमार और सुलोचना सोचते हैं – ''देखो, पिछले पांच भवों से दुष्टता के ही काम करनेवाला पापी पहले परमात्मा बन गया और हम पिछले पांच भवों से धर्मात्मा के रूप में सम्मानित और सहानुभूति के पात्र बने और अभी भी संसारी ही हैं। इसीलिए तो कहा है – ''परिणामों की गति बड़ी विचित्र होती है।''

इसप्रकार स्वर्ग से च्युत होने तक देव दम्पत्ति का चरित्र जैसा देखा, सुना, अनुभव किया था वैसा सुलोचना ने विस्तार के साथ वर्णन किया तत्पश्चात् अपने पति जयकुमार की आज्ञा से सुलोचना ने श्रीपाल चक्रवर्ती का भी चरित्र कहा, जिसे सुन जयकुमार को आश्चर्य हुआ। जो पाँच भवों के सम्बन्ध से समुत्पन्न स्नेह–सागर में निमग्न थे ऐसे जयकुमार और सुलोचना का स्मरण मात्र से ही पूर्वभव सम्बन्धी विधायें प्राप्त हो गईं। वे उन प्राप्त विधाओं के प्रभाव से विधाधरों के लोक में विहार करने लगे। धर्म, अर्थ व काम–त्रिवर्ग को पुष्ट करनेवाला जयकुमार कभी जिनेन्द्र भगवान की वन्दना कर सुमेरू पर्वत की गुफाओं में सुलोचना के साथ रमण करता था और कभी किन्नर देवों के गीत–संगीत से गुंजायमान–कुलाचलों पर सुन्दरी सुलोचना के साथ क्रीड़ा करता था।

एक समय इन्द्र के द्वारा की गई जयकुमार की प्रशंसा से प्रेरित होकर–रतिप्रभ देव ने अपनी देवांगना के साथ सुमेरू पर्वत पर जयकुमार के शील की परीक्षा की, परीक्षा में सफल देख देव ने उनकी पूजा की। सो ठीक ही है, क्योंकि सब प्रकार की शुद्धियों में शीलशुद्धि ही प्रसंसनीय है। बहुत पत्नियों और बहुत पुत्रों से सुशोभित जयकुमार अपने छोटे भाई विजय के साथ उत्तमोत्तम भोग भोगता रहा।

एक दिन वह अपनी अर्द्धांगिनी सुलोचना के साथ पर्वतों पर क्रीड़ा कर भगवान ऋषभ जिनेन्द्र की वन्दना के लिए आकाश मार्ग से समवशरण गया। समवशरण के समीप पहुँचकर उसने सुलोचना से कहा – हे प्रिये! तीन लोक के भव्य जीवों से घिरे हुए जिनेन्द्रदेव को देखो! ये अनन्त चतुष्टय के धारी त्रिलोकी नाथ आठ प्रातिहार्यों और चौंतीस अतिशयों से सुशोभित हैं। ये सौधर्म आदि चारों निकाय के इन्द्र–इन्द्राणियाँ एवं देव–देवियों सहित मस्तक झुकाकर जिनेन्द्र की वंदना कर रहे हैं। भगवान ऋषभदेव के समीप नाना ऋद्धियों के धारक अनेक मुनियों सहित वृषभसेन आदि सत्तर गणधर सुशोभित हो रहे हैं। पास ही में केवलज्ञानी बाहुबली भगवान विराजमान हैं।

हे देवी ! इधर ये तपरूप लक्ष्मी से युक्त हमारे पूज्य पिता सोमप्रभ मुनिराज के रूप में अपने अनुज श्रेयान्स के साथ विराजमान हैं। इधर ये तुम्हारे पिता अकंपन मुनिराज वैराग को प्राप्त हुए मुनिपद में विराजमान अपने एक हजार पुत्रों के साथ तप में लीन हैं। देखो ! इधर ये तुम्हारे स्वयंवर में युद्ध करनेवाले दुर्मर्षण आदि बड़े–बड़े राजा शान्तचित्त होकर तपस्या कर रहे हैं।

हे प्रिये ! ये समस्त आर्यिकाओं में अग्रणी ब्राह्मी एवं सुन्दरी हैं। इन दोनों ने कुमारी अवस्था में ही कामदेव को पराजित कर दिया। इधर ये जिनेन्द्रदेव के समीप अनेक राजाओं के साथ भोगों के मध्य रहकर भी भोगों से विरक्त मनवाले चक्रवर्ती भरत बैठे हैं। देखो ! देखो ! कैसा आश्चर्य है कि यह परस्पर विरोधी तिर्यंच भी एक साथ मित्रवत् बैठे हैं। यह सब इस धर्मसभा का ही माहात्म्य है।

इस प्रकार आकाश मार्ग से ही सुलोचना को समवशरण की महिमा से परिचित कराते हुये नीतिवेत्ता जयकुमार नीचे उतरे और तीर्थंकर परमात्मा की स्तुति करते हुये विनयपूर्वक चक्रवर्ती भरत के पास बैठ गये तथा सुलोचना सुभद्रा के पास बैठ गई। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ - 1 का शेष .....)

एवं गाथा नम्बर बोले जाने पर वह गाथा सुनाई। श्रीमती प्रभा जैन, जयपुर ने भी 25 ग्रन्थों को आद्योपान्त सुनाया। पुरस्कार वितरण श्री अश्विनभाई शाह मुम्बई एवं श्री आलोककुमारजी कानपुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आयोजित विभिन्न विशिष्ट समारोहों में रविवार, दिनांक 11 अगस्त को दोपहर में श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई का अधिवेशन सम्पन्न हुआ ।

ट्रस्ट के इतिहास एवं उसकी वर्तमान गतिविधियों की जानकारी ट्रस्ट के उपाध्यक्ष पण्डित धन्यकमारजी बेलोकर, गजपंथा ने दी। ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति एवं वार्षिक बजट की रिपोर्ट श्री सुमनभाई दोशी, मुम्बई ने प्रस्तुत की।

अधिवेशन में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के इतिहास एवं उसकी गौरवपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी दी। डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि ट्रस्ट जो इसप्रकार के आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर संचालित कर रहा है, वह एक अत्यन्त बहुजनोपयोगी एवं सराहनीय कार्य है।

अधिवेशन में ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री जवाहरलालजी बड़कुल, सुमनभाई दोशी मुम्बई एवं अमृतभाई फतेहपुर के साथ-साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में सभी समागत विद्वान भी मंचासीन थे। अधिवेशन में डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित हरकचन्दजी बिलाला, पं. कमलचन्दजी पिड़ावा एवं श्री हीराचंदजी बोहरा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

संचालन ट्रस्ट के ट्रस्टी पं. हरकचन्दजी बिलाला, अकोला ने किया।

दिनांक 12 अगस्त को श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की रजत जयन्ती के अवसर पर श्री केशवदेवजी कानपुर की अध्यक्षता में महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'हम और हमारा महाविद्यालय' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, श्री धन्यकुमारजी बेलोकर, ब्र. यशपालजी आदि मंचासीन थे।

गोष्ठी में ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल', डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री, पण्डित विराग शास्त्री, पण्डित विपिन शास्त्री, पण्डित अमोल शास्त्री, पण्डित जितेन्द्र राठी, पण्डित ज्ञायक शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री ने एवं संयोजन पं. अमोल शास्त्री ने किया।

दिनांक 13 अगस्त को रात्रि में समापन समारोह रखा गया। सभा में शिविर की शैक्षणिक उपलब्धियों के बारे में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने तथा आर्थिक उपलब्धियों के बारे में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने बताया। आभार प्रदर्शन एवं धन्यवादज्ञापन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया।

शिविर में नियमसार, समयसार अनुशीलन भाग-5 (उत्तरार्द्ध), समयसार अनुशीलन भाग-5 (पूर्ण), निर्विकल्प आत्मानुभूत के पूर्व, विचित्र महोत्सव, भक्तामर प्रवचन, क्षत्रचूड़ामणि, सूक्ति संग्रह, पंच परमेष्ठी, विदाई की बेला, जिनपूजन रहस्य, आप कुछ भी कहो, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, पंचकल्याणक महोत्सव पूजन, तीर्थंकर भगवान महावीर, अहिंसा: महावीर की दृष्टि में, भक्ति सरोवर एवं समयसार कलश पद्यानुवाद के विमोचन के साथ-साथ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा समयसार कलश पद्यानुवाद की संगीतमय कैसिट के दूसरे भाग का लोकार्पण भी किया गया।

इस अवसर पर 75 हजार 790 रुपये का सत्साहित्य एवं 18 हजार 500 रुपये के कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

नर्मदांचल के 30 स्थानों पर एकसाथ धार्मिक शिविर

नरसिंहपुर एवं उसके समीपवर्ती 30 विभिन्न नगरों में एकसाथ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन करेली के अंतर्गत नवगठित अहिंसा परिवार के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के सहयोग से बृहद् धार्मिक ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में 2100 बच्चों ने जैनधर्म की मूलभूत शिक्षाओं को ग्रहण किया तथा क्षेत्र के कुल 15 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर के माध्यम से करेली (सीमंधर जिनालय) में पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर एवं पं. मनोज शास्त्री * करेली (श्वेताम्बर) में पं. रत्नेश मेहता हिम्मतनगर * करेली (बगीचा) में पं. गजेन्द्र शास्त्री बड़ामलहरा * नरसिंहपुर (कंदेली) में पं. संतोष शास्त्री परली * नरसिंहपुर (सिटी) में पं. विनीत शास्त्री ग्वालियर * करकबेल में पं. राजेन्द्र शास्त्री टीकमगढ़ व पं. श्रेयांस शास्त्री अभाना * ठेमी में पं. सौरभ शास्त्री शहपुरा * चौपरा में पं. जितेन्द्र शास्त्री सिंगोड़ी * तेजगढ़ में पं. संजय शास्त्री बड़ामलहरा * छिंदवाड़ा में पं. अशोक शास्त्री रायपुर * परासिया में पं. आशीष शास्त्री जबेरा * चाँदामेटा में पं. निकलंक शास्त्री कोटा * जुन्नादेव में पं. अतुल शास्त्री कोलारस * पगारा में ब्र. बाबूलालजी कोटा * बनखेड़ी में पं. नरेन्द्रजी जबलपुर, पं. दीपक शास्त्री जबेरा एवं पं. प्रशम जैन जबेरा * बाबई में पं. अजित शास्त्री मौ * होशंगाबाद में पं. धर्मेन्द्र शास्त्री बड़ामलहरा * केसली में पं. प्रशांत शास्त्री मौ * गौरझामर में पं. चैतन्य शास्त्री कोटा एवं पं. विवेक शास्त्री * रहली में पं. मनीष शास्त्री सागर * बिलहरा में पं. शैलेन्द्र शास्त्री बिल्सी * जबलपुर में पं. विराग शास्त्री एवं पण्डित मनोज शास्त्री * जबेरा में पं. अमित शास्त्री एवं पं. अभिषेक शास्त्री रहली * अभाना में पं. संजय शास्त्री बड़ामलहरा * औबेदुल्लागंज में पं. राजीव शास्त्री गुना * उदयपुरा में पं. मनोज शास्त्री अभाना * गोरखपुर में पं. जितेन्द्र शास्त्री बानपुर * डोभी में पं. अभिषेक शास्त्री बण्डा * केवलारी में पं. शिखरचन्द निवाई एवं पं. चन्द्रप्रभात शास्त्री बड़ामलहरा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के दिग्दर्शक पं. मोतीलालजी करेली, पं. ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा, श्री अशोक पाटनी छिन्दवाड़ा, श्री अजय जैन गौरझामर थे। निर्देशक पं. मनीष शास्त्री रहली एवं संयोजक प्रवेश प्रभु करेली तथा अभिषेक शास्त्री रहली ने प्रत्येक स्थान का निरीक्षण किया।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह करेली में आयोजित किया गया, जिसमें पं. विमलचन्दजी झांझरी, पं. प्रदीपजी झांझरी तथा अहिंसा परिवार के समस्त पदाधिकारी मंचासीन थे। पुरस्कार वितरणकर्त्ता श्री वीरेन्द्रकुमार जैन बुढ़ार वालों की ओर से प्रत्येक स्थान पर के प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया गया। सभा का संचालन पं. मनीष शास्त्री रहली एवं पं. प्रवेश शास्त्री करेली ने किया। सम्पूर्ण शिविर में करेली मुमुक्षु मण्डल एवं श्री मुकेश जैन, श्री सुबोध जैन, कुमारी दीपाली जैन एवं कुमारी अनुभूति जैन का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

खण्डवा (म.प्र.) : यहाँ स्व. श्रीमती अनिता जैन की स्मृति में जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अनिलजी 'धवल', पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री मौ द्वारा पूजन प्रशिक्षण, बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 एवं लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका आदि अनेक विषयों पर कक्षायें चलाई गईं। शिविर में लगभग 150 बालकों ने लाभ लिया। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। **- कमलेश हूमड़**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

अष्टान्हिका पर्व सानन्द सम्पन्न

1. नांदेड (महा.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मण्डल एवं दिगम्बर जैन महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 720 तीर्थंकर महामण्डल विधान पूजन का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: पूजन विधान, दोपहर में पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने भक्तामर स्तोत्र की कक्षा ली। सायंकाल पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' द्वारा क्रमबद्धपर्याय की कक्षा ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री के सारगर्भित प्रवचन हुये। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **– प्रीतेश पाटनी**

2. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर परमागम मंदिर में अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के दोपहर में समयसार परिशिष्ट पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। सायंकाल बाल कक्षा भी चलाई गई।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित पूरणचन्दजी मौ एवं पण्डित संतोष उखलकर शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये। सभी कार्यक्रमों में पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित नीरजजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री का विशेष योगदान रहा।

3. उदयपुर : यहाँ केशवनगर में पर्व के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति द्वारा संचालित 'चल शिक्षण-शिविर' का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री परतापुर के प्रात: एवं रात्रि में 'ध्यान' विषय पर प्रवचन हुये।

यहाँ नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राकेशजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। आपके द्वारा ही बाल एवं प्रौढ़ कक्षा चलाई गई; जिसकी अन्तिम दिन परीक्षा भी हुई। समापन पर श्री कन्हैयालालजी दलावत एवं धनपालजी जेतावत ने सभी को पुरस्कार वितरित किये।

4. मकरोनिया (सागर) : यहाँ पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली के प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इस अवसर पर महिला मण्डल, बालिका मण्डल का गठन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन हुआ। फैडरेशन के अध्यक्ष एवं मंत्री क्रमश: श्री विकास मोदी एवं श्री सौरभ जैन को, महिला मण्डल एवं बालिका मण्डल की अध्यक्षा क्रमश: श्रीमती शशि जैन एवं कुमारी शिवानी जैन को तथा मंत्री क्रमश: श्रीमती अनिता जैन एवं कु.अनुभूति जैन को मनोनीत किया गया।

5. मेरठ : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर तीरगरान में पण्डित अभिनवजी शास्त्री के सान्निध्य में श्री सिद्धचक्र महा मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस दौरान पण्डित योगेशजी शास्त्री अलीगंज के मुनिधर्म विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा प्रतिदिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

डी-ब्लॉक, शास्त्रीनगर में भी सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा ने सम्पन्न कराये। रात्रि में पण्डित विकास शास्त्री मौ के सारगर्भित प्रवचन हुये। सम्पूर्ण आयोजन में श्री कमलकुमारजी जैन एवं श्री राजेन्द्रजी का विशेष सहयोग रहा। **– नवनीत जैन**

6. बड़ौत (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 17 से 24 जुलाई 2002 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन परमागम मन्दिर में पण्डित महेशचन्द्रजी जैन, कानपुर के तीनों समय क्रमश: तत्त्वार्थसूत्र पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके सान्निध्य में तीन विधान भी सम्पन्न हुये। **– सुखवीर सिंह**

7. शिरपुर (वाशिम) : यहाँ अंतरिक्ष पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र शिरपुर में 19 से 24 जुलाई तक अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर एक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

पण्डित मनोहर राव मारवडकर नागपुर, पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा, पण्डित विजयकुमारजी शास्त्री राऊत द्वारा प्रतिदिन तीनों समय प्रवचनों के अतिरिक्त सौ. ज्योतिबाई जैन कारंजा एवं पण्डित राजूकाले द्वारा बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 की कक्षायें चलाई गई। शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री ओंकारराव राऊत दि. जैन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा की गई। **– कान्तिलाल राऊत**

छात्र वृत्तियाँ

मान्यता प्राप्त स्कूलों/कॉलेजों/प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययन रत विद्यार्थियों के लिये नॉन रिफंडेबिल (वापिस न होनेवाली) छात्रवृत्तियाँ तथा इन्जीनियरिंग, मेडिकल, बिजनस मैनेजमेंट, जैनदर्शन में अनुसंधान आदि पाठ्क्रमों में उच्च शिक्षा के लिये ऋण के आधार पर रिफंडेबिल (वापिस होनेवाली) छात्रवृत्तियाँ योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर उपलब्ध हैं। निर्धारित आवेदन प्रपत्र एक लिफाफे (24ह्न10 से.मी.) पर अपना पता और पाँच रुपये का डाक टिकिट लगाकर भेजने से प्राप्त हो सकता है। पूरे विवरण सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2002 है। पता निम्नानुसार है –

– मंत्री (छात्रवृत्ति),
जैन सोश्यल वैलफेयर ऐसोसियेशन,
एच-22, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016

अवश्य पधारें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा दशहरा के अवसर पर लगनेवाला शिविर इस वर्ष 13 से 22 अक्टूबर 2002 तक आयोजित किया जायेगा। आप सभी इष्टमित्रों सहित अवश्य पधारकर धर्मलाभ लेवें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अगस्त (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127